

शेख फरीद - सबद ४
बेड़ा बंध न सकिओ बंधन की वेला ॥
राग सूही ललित, सेख फरीद, गुरु ग्रंथ साहिब, ७९४

बेड़ा बंध न सकिओ बंधन की वेला ॥
भर सरवर जब ऊछलै तब तरण दुहेला ॥ १ ॥
हथ न लाइ कसुमभड़ै जल जासी ढोला ॥ १ ॥ रहाउ ॥
इक आपीन्है पतली सह केरे बोला ॥
दुधा थणी न आवई फिर होइ न मेला ॥ २ ॥
कहै फरीद सहेलीहो सह अलाएसी ॥
हंस चलसी डुमणा अहि तन ढेरी थीसी ॥ ३ ॥ २ ॥
बेड़ा बंध न सकिओ बंधन की वेला ॥
भर सरवर जब ऊछलै तब तरण दुहेला ॥ १ ॥
हथ न लाइ कसुमभड़ै जल जासी ढोला ॥ १ ॥ रहाउ ॥
इक आपीन्है पतली सह केरे बोला ॥
दुधा थणी न आवई फिर होइ न मेला ॥ २ ॥
कहै फरीद सहेलीहो सह अलाएसी ॥
हंस चलसी डुमणा अहि तन ढेरी थीसी ॥ ३ ॥ २ ॥

सार: आलोचनात्मक सोच के महत्व को समझना आवश्यक है। यह कौशल हमें अपने विश्वासों पर सवाल उठाने और उन्हें आकार देने में मदद करता है। इसके बिना हम अंधविश्वास में फंस सकते हैं और सावधानीपूर्वक जांच के बिना जानकारी को स्वीकार कर सकते हैं। इस प्रकार की जांच की कमी हमें समूह की सोच के प्रभाव में लाकर हमारे मूल्यों के विपरीत राय के साथ सहमती की ओर ले जा सकती है।

बेड़ा बंध न सकिओ बंधन की वेला ॥

उचित समय पर बेड़ा बनाने में विफल होना, सार्थक परिवर्तन शुरू करने के प्रति समर्पण की कमी का प्रतीक है।

भर सरवर जब ऊछलै तब तरण दुहेला ॥१॥

जब समुद्र उफ़ान पर होता है और उसकी लहरें गरजती हैं तब तैरना चुनौतीपूर्ण हो जाता है। यह उपमा यह बताती है कि जब मन द्वैत और अहंकार से भरा होता है तब आदत के अनुरूप इस परिस्थिति से निकलना मुश्किल हो जाता है। (१)

हथ न लाइ कसुमभड़ै जल जासी ढोला ॥१॥ रहाउ ॥

प्रिय मित्रों, हम कुसुम को छूने में हिचकिचाते हैं क्योंकि हमें इसके रंग के फ़ीका होने का डर होता है। यह प्रतीकात्मक रूप से दर्शाता है कि हम आलोचनात्मक सोच से बचते हैं ताकि हमारी आधारित विश्वासों को चुनौती न दी जा सके। (१)(विराम)

इक आपीन्है पतली सह केरे बोला ॥

यदि कोई रूहानी तौर से कमजोर है तब वह भौतिकता के आकर्षण को आत्म-सम्मान के साथ जोड़ने से खुद को कैसे बचा सकता है?

दुधा थणी न आवई फिर होइ न मेला ॥२॥

जब दूध थनों में नहीं बहता तो इसे इकट्ठा नहीं किया जा सकता, यह प्रतीकात्मक है गुणों का जो विवेक के बिना हासिल नहीं हो सकते। (२)

कहै फरीद सहेलीहो सह अलाएसी ॥

फरीद कहते हैं प्रिय साथियों, जब हम उस सर्वव्यापी चेतना की ओर ध्यान लगाते हैं जो हम सभी को जोड़ती है।

हंस चलसी डुमणा अहि तन ढेरी थीसी ॥३॥२॥

हंस की तरह शुद्ध विचार उठते हैं, जिससे मन का द्वैत मिट जाता है। तब ही मन वास्तव में समझ सकता है कि शरीर नश्वर है और अंततः धूल में मिल जाएगा। (३)(२)

तत्त्व: शेख फ़रीद का मानना है कि ध्यान और अपने व्यक्तिगत अनुभवों पर विचार करने से हमें वास्तविकता और आत्मा की गहरी समझ प्राप्त होती है। इस ज्ञान में सभी चीज़ों की नश्वरता को पहचानना शामिल है और यह व्यक्तियों को ऐसे गुणों को विकसित करने में सहायता करता है जो उन्हें अधिक समन्वय, संतोष, दयालुता और सहानुभूति से पूर्ण जीवन की ओर ले जाते हैं।

पहलकदमी

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com